بسم الله الرحمن الرحيم

वह कौन है जिस ने आप को परदा करने का आदेश दिया है ?

प्यारी बहन! क्या आप जानती हैं कि आप को परदा करने का आदेश किस ने दिया है? यह आदेश अल्लाह ने दिया है, जो सर्वशक्तिमान,सर्वोच्च तथा सर्वपावन है! अल्लाह ने फ़रमाया है : " हे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! अपनी पत्नियों,अपनी बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दीजिये कि वे अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें, इस से उनकी पहचान हो जायेगी,परिणाम स्वरूप उन्हें कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा,और अल्लाह तआ़ला बहुत क्षमा करने वाला,बड़ा दयालु है ।" (सूरतुल अहज़ाब : 59)

प्यारी बहन ! अल्लाह ने आप को परदा करने का जो आदेश दिया है उसका पालन करने में किसी प्रकार का संकोच न करें । परदा करने से आप का दिल पाक रहेगा तथा आप को इज़्ज़त और पवित्रता प्राप्त होगी । याद रखिये कि परदा करना अल्लाह के आदेश का पालन है । क्या आप अल्लाह के आदेश का पालन करेंगी और उसके हुक्म पर चलेंगी ?

निम्न लिखित महान हदीस को पढ़िये और इस पर विचार कीजिये :

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है,वे फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : " जहन्नम में जाने वालों में से दो प्रकार के लोगों को मैं नहीं देख पाया : उन में से एक वे लोग हैं जिनके हाथों में गाय की पूँछों के समान कोड़े होंगे जिन से वे लोगों को मारते फिरेंगे,और दूसरे ऐसी महिलाएं हैं जो वस्त्र धारण करने के बावजूद नंगी होंगी,स्वयं आकर्षित होने वाली और दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने वाली होंगी,उनके सिर ऐसे होंगे जैसे बुख़्ती ऊँट की झुकी कोहान,वे न तो जन्नत में दाख़िल होंगी और न ही जन्नत की ख़ुशबू पा सकेंगी,हालांकि जन्नत की ख़ुशबू इतनी और इतनी दूरी से पाई जाती है ।" (मुस्लिम)

क्या आप अपनी माँ हज़रत आ़इशा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के आदर्शों पर नहीं चलेंगी ?

मेरी बहन ! औ़रत का परदा और उसकी लज्जा उसके मज़बूत ईमान और दीनदारी की दलील है ।

आप की माँ हज़रत आइशा बिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाती हैं : "मैं अपने उस घर में जाया करती थी जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और मेरे पिता को दफ़न किया गया है,उस समय मैं अपना हिजाब हटा देती थी और कहती थी कि

यह तो मेरे पति और मेरे पिता हैं । लेकिन जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को उनके साथ उस घर में दफ़न कर दिया गया तब से अल्लाह की क़सम मैं जब भी उस घर में गई हज़रत उमर से लज्जा करते हुये अपने आप को ख़ूब अच्छे ढंग से कपड़ों में छुपा लिया । " (अहमद और हाकिम ने इसे रिवायत किया है)

ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पत्नी ! अल्लाह आप से प्रसन्न हो ।

परदा का इस से बड़ा उदाहरण और क्या होगा?! और इस से बढ़ कर लज्जा और क्या होगी?! एक स्त्री एक ऐसे पुरुष से लज्जा कर रही है जो मर चुका है और जिसे मिट्टी के नीचे दफ़न किया जा चुका है ।

यह आप की माँ की लज्जा है,क्या आप अपनी माँ को अपना आदर्श बनायेंगी ?

इसी प्रकार आप की माँ हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से महिलाओं के वस्त्र के निचले भाग की चर्चा की तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : " महिलाएं एक बित्ता बराबर अपने कपड़े(टख़नों से) नीचे लटका लें ।" हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया : तब तो स्त्री के पैर का कुछ भाग खुल जायेगा । इस पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तो फिर औ़रत एक हाथ के बराबर अपने कपड़े को नीचे लटका ले,लेकिन इस से अधिक नीचे न करे ।"

यह हाल उस महिला का था जिसका ईमान मज़बूत था,लेकिन जिस महिला का दीन और ईमान कमज़ोर होगा वह अपनी दीनी कमज़ोरी के अनुसार एक बित्ता या एक हाथ या फिर इस से भी अधिक पैर का भाग खोलना चाहेगी ।

इस लिये मेरी बहन !: इस बात को अच्छी तरह याद रखिये कि पाकदामनी की पहचान लज्जा है ।

इस्लामी परदा की शर्तें

विद्वानों के कथनानुसार इस्लामी परदे में आठ शर्तों का पाया जाना अनिवार्य है, और वे ये हैं :

1- परदा ऐसा हो जो सारे शरीर को ढांकने वाला हो ।

2- ढीला ढाला हो,तंग नहीं हो जिस से शरीर के आकार प्रकट होते हों ।

3- वह परदा ऐसा नहीं हो जिस से काफ़िर महिलाओं के वस्त्र की समानता होती हो ।

4- उस से पुरुषों के वस्त्र की समानता नहीं होती हो ।

5- इतना पतला न हो जिस के अन्दर से शरीर झलके ।

6- परदा ऐसा न हो जो अपने आप में स्वयं श्रृंगार हो ।

7- उस में इत्र नहीं लगाई गई हो और न ही उसे धूनी दी गई हो ।

8- उस वस्त्र को पहनने का उद्देश्य प्रसिद्धि प्राप्त करना नहीं हो ।

मेरी बहन !

परदे का आदेश शरीर को छुपाने के लिये दिया गया है,बनाव सिंगार को प्रकट करने और लोगों की निगाहों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये नहीं । इस लिये ऐसे भिन्न प्रकार के बनाव सिंगार के वस्त्रों से बचिये जो हिजाब और परदे के नाम पर बाज़ारों में बेचे जा रहे हैं । वास्तव में ये हिजाब हैं ही नहीं,चाहे इन्हें हिजाब का ही नाम क्यों न दे दिया जाये! क्यों कि वास्तविकता का ही महत्व होता है,नाम से कुछ नहीं होता ।

आप ऐसा परदा प्रयोग करें जिन में वो आठों शर्तें पाई जाती हों जिनका ऊपर वर्णन हुआ,ऐसा कर के आप दुनिया और आख़िरत में सफ़लता पायेंगी ।

यह इस्लामी परदा का नमूना है

यह बेपरदगी है,परदा नहीं है

मेरी बहन !

आप मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी पुण्य और सवाब अर्जित करने के उद्देश्य से आई हैं,इस लिये परदा और हिजाब के संबंध में किसी प्रकार की ग़लती न करें। प्यारी बहन ! आप यह याद रखिये कि आप अल्लाह तआला के घर में हैं,और अल्लाह आप के बारे में सब कुछ जानता है,वह आप के बारे में ऐसी बातें जानता है जो सम्पूर्ण सृष्टि में कोई नहीं जानता। वह सब से ज़्यादा इस के योग्य है कि उस से हर जगह लज्जा की जाये,फिर यह तो उसका घर है।

मेरी बहन !

मस्जिदे हराम में सदाचार का आदेश देने तथा दुराचार को रोकने वाली समिति में कार्यरत आप के भाई आप के लिये इबादतों से भरी ज़ियारत की कामना करते हैं,जिस में आप को गुनाहों से तौबा करने तथा नेकियां अर्जित करने की तौफ़ीक़ मिले और आप सारी सृष्टि के मालिक को प्रसन्न करने में सफल हों।

हम आप के लिये अल्लाह की तौफ़ीक़ और दुनिया तथा आख़िरत में सफलता की कामना करते हैं।

आप के भाई :

मस्जिदे हराम एवं मस्जिदे नबवी के कार्यों हेतु जनरल प्रेसिडेंसी

सदाचार का आदेश देने तथा दुराचार को रोकने हेतु समिति

(मस्जिदे हराम)

जागरुकता एवं उपहार विभाग (शिक्षा आयोग)

फोन : 012/5739922

Attueyah@gmail.com

@attueyah

दीन के तीन मूलाधार

بسم الله الرحمن الرحيم

यदि आप से पूछा जाये : वे तीन मूलाधार क्या हैं जिनका ज्ञान रखना मनुष्य पर अनिवार्य है? तो आप कहिये : बन्दे का अपने रब के बारे में ज्ञान रखना,अपने दीन के बारे में ज्ञान रखना और अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में ज्ञान रखना।

पहला मूलाधार : जब आप से पूछा जाये : आप का रब कौन है? तो आप कहिये : मेरा रब अल्लाह है,जिस ने मुझे और सारे संसार को अपनी नेअ़मतों से पाला है,वही मेरा माबूद है,उसके अतिरिक्त कोई मेरा माबूद नहीं।

अगर आप से पूछा जाये : आप ने अपने रब को किस चीज़ के द्वारा पहचाना? तो आप कहिये : उसकी निशानियों और उसकी पैदा की हुई चीज़ों के द्वारा।

रब ही इबादत के योग्य है। सभी प्रकार की इबादतें जिनका अल्लाह ने आदेश दिया है वे सब केवल अल्लाह तआ़ला ही के लिये हैं। जिस ने उन में से किसी भी चीज़ को अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिये किया वह काफ़िर और मुश्रिक है।

दूसरा मूलाधार : प्रमाणों के साथ दीने इस्लाम के बारे में ज्ञान रखना : और दीने इस्लाम यह है : अल्लाह को एक मानते हुये उसके लिये आत्म समर्पण करना,उसका आज्ञापालन करते हुये उसके अधीन रहना तथा शिर्क और शिर्क करने वालों से अलग होने का ऐलान करना। दीन की तीन श्रेणियां हैं : इस्लाम,ईमान और एहसान। और हर श्रेणी के कुछ अरकान (स्तम्भ) हैं।

तीसरा मूलाधार : अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में ज्ञान रखना : और वे हैं : मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम। उन्हों ने तिरसठ वर्ष की आयु पायी। अल्लाह ने उन्हें लोगों को शिर्क से सावधान करने और तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुलाने के लिये भेजा था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का देहान्त हो गया,परन्तु आप का दीन हमेशा बाक़ी रहने वाला है।

यह आप का दीन है। ऐसी कोई भलाई नहीं है जिस के बारे में आप ने अपनी उम्मत को न बता दिया हो और न ऐसी कोई बुराई है जिस से आप ने उन्हें सावधान न कर दिया हो। अल्लाह ने उन्हें समस्त मानव जाति की ओर रसूल बना कर भेजा और सारे इंसानों तथा जिन्नों के ऊपर उनके आज्ञापालन को अनिवार्य क़रार दिया तथा उनके द्वारा दीन को सम्पूर्ण कर दिया।

मस्जिदे हराम एवं मस्जिदे नबवी के कार्यों हेतु जनरल प्रेसिडेंसी

सदाचार का आदेश देने तथा दुराचार को रोकने हेतु समिति (मस्जिदे हराम)

" ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! अपनी पत्नियों, अपनी बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दीजिये कि वे अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें, इस से बहुत जल्द उनकी पहचान हो जायेगी, परिणाम स्वरूप उन्हें कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा, और अल्लाह तआ़ला बहुत क्षमा करने वाला,बड़ा दयालु है।" (सूरतुल अहज़ाब : 59)

" और आप मुस्लिम महिलाओं से कह दीजिये कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें तथा अपने श्रृंगार को प्रकट न करें, सिवाय उसके जो (साधारणतया) खुला रहता है।" (सूरतुन नूर : 31)

ऐ मेरी प्यारी बहन